❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वदेवो महाँ असि।
- सामवेद 1026

हे विश्वदेव परमात्मन् ! तू महान है।
O the Lord of the universe ! You are the Greatest of all.

वर्ष 42, अंक 47 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 14 अक्तूबर, 2019 से रविवार 20 अक्तूबर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ विजय के 150वें वर्ष के शुभ अवसर पर

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन अनुपम सफलताओं के साथ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द, वैदिक धर्म और आर्य समाज के जय-जयकार से गूंज उठी काशी नगरी

तीन दिवसीय स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन में उमड़ा आर्यजनों का सैलाब

बच्चों और युवाओं की प्रशंसनीय भागीदारी से बढ़ा भविष्य का उत्साह : संगठन के प्रति दिखा अद्भुत आत्मविश्वास

यज्ञ-योग-स्वाध्याय बना आर्यसमाज का अहम संकल्प

वैदिक धर्म प्रचारार्थ अनेक प्रस्ताव हुए स्वीकृत

महासम्मेलन ने पुनः बजाया काशी में वेदों का डंका

आर्य समाज ने काशी में रचा एक नया इतिहास : 150 वर्षों में पहली बार निकाली भव्य विशाल शोभायात्रा

शास्त्रार्थ शैली की शिक्षा को गुरुकुलों में बढ़ावा देने का आह्वान

आर्यसमाज के स्मारकों को सुन्दर और आकर्षक बनाने हेतु सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत सहयोग निधि ट्रस्ट की होगी स्थापना

- शेष पृष्ठ 5 एवं 6 पर

इस वर्ष दीवाली की पूर्व संध्या पर होगा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 136वें निर्वाण दिवस का विशेष आयोजन

कृपया ध्यान दें

शनिवार 26 अक्तूबर, 2019, समय - सायं : 3:15 से 6:15 बजे तक

स्थान : रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली-110002

कृपया ध्यान दें

वेद-स्वाध्याय

हे वरुण! हमें अनृत=असत्य से मुक्त करो

बह्व३दं राजन् वरुणानृतमाह पूरुषः।
तस्मात् सहस्त्रवीर्य मुञ्च नः पर्यंहसः।।-अथर्व० 19/44/8
ऋषिः **भृगुः**।। देवता - **वरुणः**।। छन्दः **अनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ - **वरुण** = हे पापनिवारक! **राजन्** = हे सच्चे राजा! **पूरुषः** = मनुष्य **इदम्** = यह [तुच्छ-तुच्छ] **बहु** = बहुत **अनृतम्** = झूठ **आह** = बोलता है। **तस्मात्** = उस **अंहसः** = पाप से, **सहस्त्रवीर्य** = हे अपरिमित वीर्यवाले! तू **नः** = हमें **परिमुंच** = सब ओर से मुक्त कर दे।

विनय - हे सच्चे राजा, हे पाप निवारक! मनुष्य बहुत अनृत बोला करता है और बड़ी तुच्छ-तुच्छ बातों पर अनृत बोला करता है। प्रातः से लेकर रात्रि तक एक दिन में ही न जाने कितनी बार असत्य भाषण करता है। हम मनुष्यों का जीवन इतना अनृतमय हो गया है कि प्रायः हम लोग यह अनुभव ही नहीं करते कि हम कितना अधिक असत्य बोलते हैं। यह अनुभव तो तब मिलता है जब मनुष्य सचमुच झूठ से घबराने लगता है और सत्य ही बोलने के लिए सदा सचिन्त रहने लगता है। उस समय मुख से निकली अपनी एक-एक वाणी पर पूरा-पूरा निरीक्षण और विवेचन करने पर उसे पता लगता है कि वह सूक्ष्म रूप में कितने अधिक असत्य बोलता है। सच तो यह है कि हममें से जो लोग अपने को सत्य बोलनेवाला समझते हैं वे भी असल में बहुत असत्य बोलते हैं। जो पूरा सत्यवादी होगा, पतंजलि, व्यास आदि ऋषि-मुनियों के कथनानुसार, उसकी वाणी में तो ऐसा तेज आ जाएगा कि वह जो कुछ कहेगा, वह सच्चा हो जाएगा। वह क्रिया और फल से समन्वित हो जाएगा। यदि वह किसी को कहेगा कि 'तू नीरोग हो जा' तो वह नीरोग हो जाएगा, अर्थात् जो कार्य हम हाथ-पैर आदि की स्थूल शक्ति से सिद्ध करते हैं वह पूरे सत्यवादी पुरुष की वाणी की शक्ति से हो जाता है, अतः वास्तव में हममे से ऊँचे-ऊँचे पुरुष भी अभी सर्वथा असत्यरहित नहीं हुए हैं।

हे सहस्त्रवीर्य! इस असत्य से तुम्हीं हमें बचाओ। हमने आत्मनिरीक्षण करते हुए सदा देखा है कि हम सदैव तुच्छ भय, लोभ, आसक्ति आदि के कारण ही, सदैव अपनी कमजोरी, निर्बलता, वीर्यहीनता के कारण ही असत्य बोलते हैं, अतः हे अपरिमित वीर्यवाले! तुम हमें ऐसे वीर्य और बल से भर दो कि हम सदा निधड़क होकर सत्य ही बोलें, झूठ बोल ही न सकें, झूठ बोलने की कभी आवश्यकता ही अनुभव न करें। सचमुच आपकी सहस्त्रवीर्यता का ध्यान कर लेने पर हममें इतना बल-संचार हो जाता है कि हम अनुभव करने लगते हैं कि हम भी कभी पूरे सत्यवादी हो जाएँगे। इस तरह, हे सहस्त्रवीर्य! तुम हमें सदा असत्य से छुड़ाते रहो, असत्य के पाप से हमें सब ओर से मुक्त करते रहो।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

काशी महासम्मेलन की सफलता की आर्यजनों को बहुत-बहुत बधाई

काशी महासम्मेलन ने आर्य समाज का बहुत गौरव बढ़ाया, स्वध्याय की परम्परा को ताकत मिली, वैदिक मन्त्रों, स्वामी देव दयानंद, आर्य समाज तथा वैदिक धर्म के नारों से न केवल काशी नगरी गूंजी बल्कि 150 वर्ष पहले के स्वामी दयानंद जी के शास्त्रार्थ को आर्यजनों ने स्मरण किया। एक बार फिर काशी के युवाओं को अवलोकन करने मौका दिया कि हमारी सनातन संस्कृति में अन्धविश्वास और पाखंड के लिए कोई स्थान नहीं है। हम वेदों के मार्ग पर चलने वाले लोग थे न कि अन्धविश्वास के मार्ग पर चलने वाले।

आमतौर पर धर्म और अध्यात्मिक कही जाने वाली काशी नगरी का जिक्र आते ही आज के समय में सबसे पहले देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकसभा सीट की तस्वीर दिखाई देती है। नरेंद्र मोदी ने साल 2014 में काशी पहुंचकर कि कहा था गुजरात की धरती से आया हूँ, गंगा माँ ने बुलाया है। देश को आगे बढ़ाने में इस काशी नगरी से मोदी की एतिहासिक जीत ने देश को आगे बढ़ाने में कार्य किया। लेकिन इसी काशी नगरी ने आज से 150 वर्ष पहले गुजरात की धरती से युग प्रवर्त्तक स्वामी दयानंद सरस्वती जी को भी बुलाया था। ताकि इस सोये देश को जगाने के लिए, आगे बढ़ाने के लिए पाखंड और अंधविश्वास का समूल नाश किया जा सके। यदि काशी नगरी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को भुला दिया तो काशी का परिचय अधूरा रह जायेगा।

जब सन 1861 में महर्षि दयानंद जी का पौराणिक रीति-नीति के मानने वाले पाखंड में पारंगत पंडितों से काशी में शास्त्रार्थ हुआ तो वह महज एक शास्त्रार्थ नहीं बल्कि एक नये युग की आहट थी। उस आहट ने इस देश की धरा के युवाओं की चेतना को न केवल जाग्रत किया बल्कि उन्हें एक वैचारिक हथियार भी दिया था। धीरे-धीरे समय गुजरता गया। स्वामी दयानन्द के बाद उनके शिष्यों ने देश-विदेश में आर्य समाज की वैदिक मान्यताओं का प्रचार भी किया और विस्तार भी किया।

देश-विदेश में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों जैसे अनेकों सफल आयोजनों को क्रम में इस वर्ष आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक सभा ने फिर एक बीड़ा उठाया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, काशी शास्त्रार्थ स्मृति न्यास एवं जिला सभा वाराणसी ने संयुक्त रूप से आयोजन किया और देखते ही देखते काशी में एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर का महर्षि दयानंद सरस्वती के प्रसिद्ध काशी शास्त्रार्थ की 150 वी वर्षगांठ के अवसर पर तीन दिवसीय स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन के आयोजन की नीव रख दी। यधपि यह कार्य कोई छोटा-मोटा नहीं था क्योंकि आज के वर्तमान युग में जिस तरह से अनेकों पाखंडों को सरकारों का संरक्षण प्राप्त है उस लिहाज से तो बिलकुल भी नहीं। परन्तु आर्य समाज के जुझारू, कर्मठ कार्यकर्ताओं ने अपनी एकजुटता दिखाते हुए 150 वर्ष बाद उसी काशी की भूमि पर एक बार फिर जो वैदिक शंखनाद किया, ऐसे सफल आयोजन का भव्य आरम्भ और समापन विरले ही सुनने और देखने को मिलता है।

कार्यक्रम भले ही 11 से 13 अक्टूबर का था लेकिन 10 अक्तूबर प्रातः से ही जिस तरह बिहार, बंगाल, तेलंगाना, महाराष्ट्र, कर्नाटक, छतीसगढ़, झारखंड, उत्तर भारत के हजारों की संख्या में कार्यकर्ताओं के अलावा पूर्वी उत्तर प्रदेश समेत कई राज्यों से आये विशाल संख्या में हजारों लोगों का वर्णन करें क्योंकि भारत का कोई राज्य और हिस्सा ऐसा शेष नहीं था जहाँ से आर्यजन न आये हो। बल्कि म्यांमार, नेपाल, बांग्लादेश समेत कई देशों के उत्साहित कार्यकर्ता भी भाग लेने पहुंचे। विशाल क्षेत्र में फैला पंडाल तो आर्यजनों की उपस्थिति दर्ज करा ही रहा था, इसके अतिरिक्त यज्ञशाला, भोजनालय से लेकर महासम्मेलन स्थल के मुख्यमार्गों के अलावा कोई कोना ऐसा शेष नहीं था जहाँ ये कहा जा सके कि यह स्थान खाली है। हर कोई उत्साहित और गौरव के इन पलों का साक्षी बनकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा था।

बहुत से लोग सोच रहे होंगे कि आखिर भारत की राजधानी दिल्ली से इतनी दूर इस विराट महासम्मेलन के लिए स्थान क्यों चुना गया? दरअसल एक तो 150 वर्ष पूर्व काशी शास्त्रार्थ की विजय स्मृतियाँ आज धुंधली सी पड़ने लगी थी। जब काशी के दिग्गज पंडितों के साथ स्वामी दयानंद का शास्त्रार्थ काशी नरेश महाराज ईश्वरीनारायण सिंह की मध्यस्थता में शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। इस शास्त्रार्थ के दर्शक के तौर पर काशी नरेश के भाई राजकुमार वीरेश्वर नारायण सिंह, तेजसिंह वर्मा आदि प्रतिष्ठित व्यक्ति भी उपस्थित थे। दूसरा स्वामी जी ने वहां जिस पाखंड के खिलाफ अपनी मुहिम चलाई थी उन लोगों की अगली पीढियों ने आज अन्य कई प्रकार के नये पाखंड ईजाद कर लिए तो आज समय की मांग को देखते हुए स्वामी देव दयानन्द के शिष्यों का कर्तव्य बनता था कि फिर उसी काशी से फिर आर्य समाज का एक नया उद्घोष हो ताकि लोग यह न समझ बैठें कि आर्य समाज पाखंड से हारकर बैठ गया है।

इसी उद्घोष का नतीजा रहा कि काशी की नई पीढ़ी से लेकर पूर्वी उत्तर प्रदेश बिहार में इस महासम्मेलन की दस्तक ने अगले कार्यक्रमों के दरवाजे खोल दिए। महासम्मेलन स्थल के बाहर मुख्य मार्ग पर मानो मेला सज गया। रेहड़ी पटरी वालों से लेकर बनारसी साड़ियों की दुकानें तक सज गयी, इनमें बहुतेरे लोगों को तो इससे पहले आर्य समाज का पता तक नहीं था लेकिन जब काशी की सड़कों पर भगवा ध्वज, केसरियां टोपी और पगड़ी पहने जब विशाल शोभायात्रा का आयोजन हुआ तो हर किसी के लिए आश्चर्य का केंद्र बन गया, काशी के सभी समाचार पत्रों में तो महासम्मेलन ने सुर्खियाँ बटोरी ही साथ जी नरिया लंका से चली शोभायात्रा जहां से भी गुजरी लोगों ने उनका भव्य स्वागत किया। महासम्मेलन की सफलता की आर्यजनों को बहुत-बहुत बधाई।

सही मायनों में देखा जाये तो काशी महासम्मेलन ने आर्य समाज का बहुत गौरव बढ़ाया, स्वध्याय की परम्परा को ताकत मिली, वैदिक मन्त्रों, स्वामी देव दयानंद, आर्य समाज तथा वैदिक धर्म के नारों से न केवल काशी नगरी गूंजी बल्कि 150 वर्ष पहले के स्वामी दयानंद जी के शास्त्रार्थ को आर्यजनों ने स्मरण किया। एक बार फिर काशी के युवाओं को अवलोकन करने मौका दिया कि हमारी सनातन संस्कृति में अन्धविश्वास और पाखंड के लिए कोई स्थान नहीं है। हम वेदों के मार्ग पर चलने वाले लोग थे न कि अन्धविश्वास के मार्ग पर चलने वाले। काशी महासम्मेलन से लौटे सभी आर्य समाज से जुड़ें लोग प्रसन्नता पूर्वक कह रहे हैं कि इस कड़ी में अंतिम लक्ष्य है **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** अर्थात संपूर्ण विश्व को आर्य यानी श्रेष्ठ बनाना है। यदि कहीं जो अपूर्णता बर्ची हैं उसे दूर करके जल्द ही हम संगठन, समाज व राष्ट्र को सर्वश्रेष्ठ बनाते हुए विश्व भर को आर्य बनाने के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। - ***सम्पादक***

सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग पर एक चिन्तन

सोशल मीडिया जिन्दगी भी और मौत भी

सोशल मीडिया हमारे मन मस्तिष्क पर इस कदर हावी हो जाता है कि हम उससे बाहर निकलना नहीं चाहते हैं और ज्यादा से ज्यादा वही पर अपना समय बिताना चाहते हैं। ऐसे में बाहरी दुनिया से पूरी तरह से कट जाते हैं। बाहर की दुनिया से दूर होते चले जाना ही सोशल डिसऑर्डर के होने की ओर संकेत करता है। लोगों को यह समझना होगा कि इंटरनेट का मतलब सिर्फ सोशल मीडिया ही नहीं है। यह सूचनाओं का भंडार है। ऐसे में सोच-समझ कर इस्तेमाल करना ही बेहतर होगा, विश्वास करना अच्छी बात है लेकिन बिना देखें जाने किसी पर अत्यधिक विश्वास कई बार घातक साबित होता है।

सोशल मीडिया यानि इंटरनेट के माध्यम से लोगों को सार्वजनिक रूप से अपने विचारों, भावनाओं और जीवन के हिस्सों को दूसरों के साथ साझा करने की अनुमति देने वाला एक सामूहिक मंच है। लेकिन पिछले कुछ दिनों की घटनाओं ने यह साबित कर दिया कि यह सामूहिक मंच अब बेहद खतरनाक और अमानवीय बनता जा रहा है। नकली समाचार, फर्जी वीडियो अन्य ट्रोलों के साथ आज यह जानना मुश्किल हो गया है कि किस पर, कितना तथा कहाँ तक भरोसा करना चाहिए।

पिछले साल अपने पुरुष मित्र से धोखा मिलने पर होशियारपुर जिले की 18 साल की मनीषा ने आत्महत्या कर ली और सोशल मीडिया पर आत्महत्या को लाइव स्ट्रीम कर दिया था। मनीषा फेसबुक पर अपने प्रेमी की अनदेखी से परेशान थी इस कारण उसने यह कदम उठाया था। यानि जिंदगी में अच्छे मित्रों की कमी और ऑनलाइन मित्रों की अनदेखी, युवाओं में आत्महत्या का कारण बन रही है।

सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर आज कल युवा असली जीवन के रिश्तों की अनदेखी कर नकली रिश्ते बना तो रहे हैं किन्तु जब वे किसी से बात करना चाहते या उन्हें सच्ची हमदर्दी की जरूरत होती है, तो उनके सहयोग के लिए सच्चे मित्र नहीं होते। ये भी कह लीजिये कि बहुत से युवा सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर अस्वीकारोक्ति को सही से संभाल नहीं पाते। साइबर धमकियां बढ़ रही हैं। इस कारण भी अनेकों युवा आत्महत्या जैसे कदम उठाने से भी गुरेज नहीं कर रहे हैं।

कुछ समय पहले कोलकाता में कक्षा ग्यारह में पढने वाली रिया खन्ना ने आत्महत्या की थी। उसनें फेसबुक पर किसी फैजल इमाम खान की फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार की थी और बाद में दोनों अच्छे दोस्त बन गए। जब दोस्ती में खटास आई तो फैजल ने उससे बदला लेने के लिए फेसबुक पर रिया का एक फर्जी अकाउंट बनाया। एडिटिंग करके बनाई रिया की तस्वीरें फेसबुक पर अपलोड कर दीं। साथ में उसने वहां पर रिया का मोबाइल नंबर भी डाल दिया। इसी तरह साल 2012 में जालंधर में पढ़ने वाली एक लड़की रक्षा ने फेसबुक पर कुछ युवकों द्वारा सताए जाने के कारण आत्महत्या कर ली थी। रक्षा अकेली थी 1997 में उसके माता-पिता को आतंकियों ने मार डाला था। बेटी को सोशल मीडिया के आतंकियों ने मरने के लिए मजबूर कर दिया।

करीब डेढ़ अरब से अधिक सक्रिय दैनिक उपयोगकर्ताओं के साथ सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाले सोशल मीडिया प्लेटफार्म वर्तमान में मौत और अवसाद के अड्डे बनते जा रहे हैं। जरूरी है कि व्यक्ति अपने जीवन में संतुलन बना कर चलें। कई मायनो में सोशल मीडिया में ऐक्टिव रहना जरूरी हो जाता है। मगर यह भी ध्यान रखें कि यह आभासी दुनिया है, वास्तविक नहीं। यदि हम इसे जरूरत से ज्यादा समय देंगे तो वास्तविक रिश्ते खो देंगे। क्योंकि अभी तक रिश्तों की दुनिया में सामाजिक और आर्थिक पहलू ही प्रमुख थे लेकिन आधुनिक जीवनशैली ने अब मनोवैज्ञानिक पहलू भी जोड़ दिया है।

कहा जाता है जीवन कथा गहरी जानकारियों और प्रामाणित रिश्तों की जीवनरेखा है। जब हम इस कथा को सोशल मीडिया के प्लेटफार्म पर खींच लाते हैं, तो अन्य लोग वास्तव में आपकी कहानी का हिस्सा बन जाते हैं। हम दोस्तों का चुनाव इस धारणा के आधार पर करते हैं वे हमारी समान विचारधारा वाले हैं, आत्म-सीमित है, हमारे हितों और पसंद-नापसंद को स्वीकार करते हैं।

जबकि सोशल मीडिया एक तरह का वही समाज है, जहां हमारे जैसे लाखों लोग होते हैं जिनसे हम रोजाना ऑनलाइन मिलते हैं और उनसे अपनी बातों को साझा करते हैं। कुछ लोग प्रेम करते हैं, नये रिश्तों को भी बनाते हैं। फेसबुक प्रोफाइल्स से आकर्षित होकर दोस्त बना लेते हैं और झटपट शादी करने का फैसला ले लेते हैं। कुछ समय पहले अमेरिका के एक लड़के ने सोशल मीडिया एप्प के जरिए डेटिंग के लिए लड़की ढूंढ़ना शुरू किया। उसे पता नहीं था कि उसकी बहन भी उसी ऐप पर डेटिंग के लिए लड़का ढूंढ़ रही है। और इसी बीच लड़के का मैच उसकी ही बहन से हो गया था।

देखा जाये तो शुरू में लोग प्रोफाइल फोटो देखते हैं, बात करते हैं, पहले दोस्ती फिर प्यार और एक नये रिश्ते की शुरुआत कर देते हैं। लेकिन क्या प्रोफाइल फोटो उसी का है, जिससे बात हो रही है? या उसके बारे में लिखी गयी बातें, उसकी नौकरी, उसकी शिक्षा सब सच है? हो सकता है कोई फेक प्रोफाइल बनाकर आपको सिर्फ एक शिकार के तौर पर देख रहा हो? क्योंकि कई लोग अपनी मानसिक, आर्थिक और जज्बाती जरूरतों के लिए सोशल मीडिया पर निर्भर हो चुके हैं।

कुछ समय पहले मनोविज्ञान से जुड़े लोगों ने एक अध्ययन में पाया था कि कम आत्म-सम्मान वाले लोग, सोशल मीडिया का इस्तेमाल रिश्तों को बनाने में करते हैं। लेकिन जब यह रिश्ते टूटते हैं तो कई बार इन्सान आत्महत्या जैसे कदम भी उठा लेते हैं। इसका कारण ये भी माना जाता है कि लोग सोशल मीडिया पर बहुत से दोस्त तो बना लेते हैं लेकिन जो असल में करीबी हैं, उनसे पूरी तरह से अलग हो जाते हैं। क्योंकि सोशल मीडिया हमारे मन मस्तिष्क पर इस कदर हावी हो जाता है कि हम उससे बाहर निकलना नहीं चाहते हैं और ज्यादा से ज्यादा वही पर अपना समय बिताना चाहते हैं। ऐसे में बाहरी दुनिया से पूरी तरह से कट जाते हैं। बाहर की दुनिया से दूर होते चले जाना ही सोशल डिसऑर्डर के होने की ओर संकेत करता है। लोगों को यह समझना होगा कि इंटरनेट का मतलब सिर्फ सोशल मीडिया ही नहीं है। यह सूचनाओं का भंडार है। ऐसे में सोच-समझ कर इस्तेमाल करना ही बेहतर होगा, विश्वास करना अच्छी बात है लेकिन बिना देखे जाने किसी पर अत्यधिक विश्वास कई बार घातक साबित होता है।

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

सिख जाट कैसे बना आर्यसमाजी?

गतांक से आगे -

हरिसिंह के ग्राम से चार कोस की दूरी पर रायकोट नाम का कस्बा है। ग्राम के लोग लेन-देन के लिए वहाँ आते-जाते रहते थे। एक दिन हरिसिंह भी रायकोट गया हुआ था। एक पण्डित बाजार में खड़ा होकर उपदेश दे रहा था। यह भी श्रोताओं में खड़ा हो गया। एक दुकानदार ने इसे कहा, ''चौधरीजी! अपना काम करो, जाओ। क्यों यहाँ समय नष्ट करते हो। यह तो नास्तिक है। इसकी बातों में क्यों समय नष्ट करते हो। यह न देवी तथा देवताओं को माने और न श्राद्ध-तीर्थयात्रा को माने।''

हरिसिंह ने कहा ''मानना-न-मानना तो अपनी इच्छा की बात है, परन्तु सुनने में क्या हानि है।''

दैवयोग से पण्डितजी का विषय था, 'वेद पठन-पाठन का अधिकार मानवमात्र को है।' व्याख्यान हरिसिंहजी को बड़ा अच्छा लगा। व्याख्यान के पश्चात् ये पण्डितजी के पास जाकर बोले, ''मैं एक ग्रामीण जाट हूँ। थोड़ी उर्दू, गुरुमुखी व हिन्दी भी जानता हूँ। क्या आप मुझे गायत्री मन्त्र सिखा देंगे?''

पण्डितजी ने कहा, ''हाँ, सिखा दूँगा, चलो मेरे साथ। पण्डितजी ने गायत्री मन्त्र सिखाया और सन्ध्या की पुस्तक देकर कहा, ''कहो तो मैं पाठ करवा दूँ? सायं-प्रातः यह वैदिक सन्ध्या किया करें। कुछ समय पश्चात् ये फिर रायकोट जाकर आर्यों से मिले और सत्यार्थप्रकाश ले-आये। इसे पढ़ते हुए संस्कृत का भी कुछ ज्ञान प्राप्त किया। फिर आर्यों को बुलाकर यज्ञोपवीत लिया। ग्राम में बड़ा प्रचार कराया। पन्द्रह-बीस घर आर्य बन गये, परन्तु पोंगा-पन्थी ब्राह्मणों ने आर्यसमाज का कड़ा विरोध किया।+

स्मरण रहे कि स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज का जन्म भी इसी क्षेत्र में हुआ था।

हरिसिंह चलता-फिरता आर्यसमाज बन गया। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज ने लिखा है कि आर्यवीर हरिसिंह बड़ा स्वाध्याय प्रेमी था, उसका अपना

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

एकरूपीय यज्ञ प्रशिक्षण शिविर

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में 10,000 याज्ञिकों द्वारा किया गया एकरूप यज्ञ के विहंगम दृश्य के सम्पूर्ण विश्व के आर्यजन साक्षी रहे। यज्ञ का यह अनुपम दृश्य आर्य समाज के इतिहास में एक महान कीर्तिमान है। इस क्रम में भविष्य में भी ऐसे वृहद यज्ञ के आयोजन हेतु दिल्ली के समस्त आर्य विद्यालयों एवं गुरुकुलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण देने के लिए विशाल प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इसके लिए आर्य विद्यालय एवं गुरुकुलों के अधिकारीगण योजना बनाए और सामूहिक रूप से विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण की कक्षाओं का आयोजन करें। इसके लिए सभा की ओर से प्रशिक्षक की भी व्यवस्था की जाएगी।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- **- सतीश चड्ढा, महामंत्री,**

आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य, मो. 9313013123

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 136वें निर्वाण दिवस पर विशेष

हे मेरे ऋषिवर ! तुम्हें प्रणाम बार-बार

एक सांझ जब सूरज ढ़लने लगा और प्रकृति में खामोशी छाने लगी। सूरज की किरणों की रोशनी धीरे-धीरे कम हो रही थी और उधर कुछ फूलों की पंखुड़ियां भी सिकुड़ने लगी। हवा में भी थोड़ा ठहराव था। किसी ने अस्ताचल की ओर जाते हुए सूर्य से प्रश्न किया कि हे सूर्य, आपने दिन भर पूरे संसार को प्रकाशित किया, किंतु अब आपके जाते समय प्रकृति में यह उदासी क्यों गहराती जा रही है? सूर्य ने उत्तर दिया यह प्रकृति में उदासी स्वाभाविक है, जिसका एहसास मुझे भी हो रहा है, मैंने पूरी शक्ति से अँधेरे को दूर भगाया, सबके जीवन-उजालों से भरने का प्रयत्न किया, चारों तरफ उमंग-उत्साह-उल्लास फैलाया। किंतु अब फिर धरा पर अंधेरा पैर फैलाने के लिए आतुर है, यह देखकर मुझे भी लगता है कि अभी मेरा कार्य अधूरा है। लेकिन ईश्वर की व्यवस्था सर्वोपरि है। सूर्य की इस अधूरे कार्य की बात को सांझ के धुंधले अंधेरों के बीच जगमगाते नन्हे दीपक ने सुनकर कहा कि हे सूर्य, तेरी ज्योति ही मेरा वजूद है, तेरी रोशनी ही मेरी शक्ति है, साहस है, जब तक मेरा जीवन है तब तक मैं अपनी पूरी सामर्थ्यशक्ति से अंधेरों से लड़ता रहूंगा, इस प्रज्ज्वलित दीपक की तरह अनेक दीपक प्रदीप्त हो उठे और सूर्य की प्रेरणा से अंधेरों को दूर भगाने लगे।

यह एक कवि की कल्पना है। किंतु आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी अज्ञान-अविद्या, ढोंग-पाखंड और कुरीतियों के अंधेरों के बीच सूर्य बनकर प्रकट हुए थे। महर्षि ने अपने जीवन को तप-त्याग-साधना-संयम-स्वाध्याय से इतना प्रकाशित किया था कि उस समय धरती पर फैला घोर अंधेरा ऋषिवर की पाखंड खंडिनी पताका से इस तरह तिरोहित होता गया, जैसे सूर्य की किरणें अंधेरों के बीच नया सवेरा लेकर आती है। महर्षि के तपोबल से इस भारत भूमि पर सृष्टि के आरंभिक चरण वैदिक काल के मनोहारी चिन्ह दिखाई देने लगे थे, 1875 में आर्य समाज की स्थापना करने के उपरांत ऋषिवर केवल आठ वर्ष की अल्प अवधि तक आर्य समाज को अपना मार्गदर्शन दे पाए और 136 वर्ष पूर्व उनके रसोइए द्वारा दिए गए विष के कारण दीपावली के दिन देह त्यागकर निर्वाण को प्राप्त हो गए। ऋषि ने अपने कातिल को अभय दान देते हुए यही कहा था कि मेरा बहुत-सा कार्य अधूरा रह गया, ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो। ऋषिवर ज्ञान के सूर्य थे धरा पर फैले अंधेरों का तिरोहण कर गए। मानव समाज को वेद मार्ग पर चलना सिखा गए। स्वयं जहर पीकर भी मानव जाति को अमृत पिला गए।

ऋषिवर की अमर बगिया आर्य समाज उनकी प्रेरणा और आशीर्वाद की सघन छाया में निरंतर फल-फूल रही है। आर्य समाज के 145 वर्षों के स्वर्णिम इतिहास की गौरवगाथा हम आर्यों के लिए एक बड़ी विरासत है। भारत के इतिहास को अगर दो हिस्सों में बांटा जाए, आर्य समाज से पूर्व और आर्य समाज की स्थापना के बाद, तो ज्ञात हो जाएगा कि भारत माता की आजादी से लेकर, राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षा सेवा, नारी को पढ़ने का अधिकार, वैदिक धर्म-संस्कृति का पुनर्जागरण, दलितोद्धार, सती प्रथा की समाप्ति, विधवाओं का उद्धार, वेदों के ज्ञान का प्रचार-प्रसार, मानव सेवा के हर क्षेत्र में आर्य समाज ने अभूत पूर्व योगदान दिया है, दे रहा है और देता रहेगा। आज संपूर्ण विश्व में 10000 आर्य समाज, 2500 विद्यालय, 600 गुरुकुल, 10000 अनाथ बच्चों के सर्वांगीण विकास के केंद्र अनाथालय, 250 बड़े और 5000, लघु चिकित्सा केंद्रों के रूप में आर्य समाज सेवा-साधना के नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। विश्व के 32 से भी अधिक देशों में आर्य समाज का विस्तार अब तक हो चुका है और हमें विश्वास है कि हम जल्द ही संपूर्ण विश्व में ओम् की पताका फहराएंगे।

....आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी अज्ञान-अविद्या, ढोंग-पाखंड और कुरीतियों के अंधेरों के बीच सूर्य बनकर प्रकट हुए। महर्षि ने अपने जीवन को तप-त्याग-साधना-संयम-स्वाध्याय से इतना प्रकाशित किया था कि उस समय धरती पर फैला घोर अंधेरा ऋषिवर की पाखंड खंडिनी पताका से इस तरह तिरोहित होता गया, जैसे सूर्य की किरणें अंधेरों के बीच नया सवेरा लेकर आती हैं। .....

ऋषिवर के अमृत संदेशों को करें अपने जीवन में धारण

ऋषि दयानंद जी के 136 वें निर्वाण दिवस पर हम आर्यजनों को ऋषिवर के अमृत जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। अतः आओ आर्यो! ऋषिवर के अमृत संदेशों को करें अपने जीवन में धारण।

मानवता का संदेश

"आओ, लौट चलें वेदों की ओर" का शंखनाद करने वाले ऋषि दयानंद ने मानव मात्र को वेद का संदेश देते हुए मनुष्य बनने की प्रेरणा प्रदान की। ऋषि ने कहा था - "मनुष्य उसी को कहना कि जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने सर्वसामर्थ्यो से धर्मात्माओं की, चाहे वे महाअनाथ निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति तथा प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ महाबलवान् और गुणवान् भी हों तथापि उनका नाश अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करें। अर्थात् जहां तक हो सके, अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो। चाहे प्राण भले ही चले जाएं, परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।"

प्राणी मात्र के प्रति ऋषि का प्रेमभाव

महर्षि दयानंद जी ने सदैव ईश्वर को सर्वोपरि मानने की प्रेरणा प्रदान की है। ईश्वर की आज्ञाओं के पालन को उसकी सच्ची भक्ति कहा है। ऋषिवर ने स्वयं अपने प्रत्येक ग्रंथ के आरंभ में ईश्वर को सहाय मानकर प्रार्थना की है। गोकरुणा निधिः के समीक्षा प्रकरण में पृ.नं. 15 पर ऋषिवर द्वारा की गई करुणभाव में प्रार्थना हृदय को भाव-विभोर करने वाली है-हे परमेश्वर! तू क्यों इन पशुओं पर, जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करता? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है, क्या उनके लिए तेरी न्यायसभा बन्द हो गई है? क्यों उनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता, और उनकी पुकार नहीं सुनता?

- शेष पृष्ठ 6 पर

75वें जन्मदिवस के अवसर पर अमृतमहोत्सव

रविवार 10 नवम्बर, 2019 समय : प्रातः 10 से 1 बजे
आर्यसमाज पंखा रोड, सी - ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधान संचालिका साध्वी डॉ. उत्तमा यति जी (पूर्व नाम - डॉ. उज्ज्वला वर्मा) का **75वां जन्मदिवस समारोह अमृतमहोत्सव** के रूप में बहुत ही उत्साह के साथ रविवार 10 नवम्बर, 2019 को आर्यसमाज पंखा रोड, सी - ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058 में प्रातः 10 से 1 बजे तक मनाया जाएगा। समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों, गुरुकुलों, विद्यालयों, आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, सदस्यों से निवेदन है कि अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर साध्वी डॉ. उत्तमायति जी को अपनी ओर से शुभकामनाएं प्रदान करें।

- श्रीमती मृदुला चौहान, संचालिका,
सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल

प्रथम पृष्ठ का शेष

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महा.....

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी एवं ने श्री सुरेशचंद्र आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री ऐतिहासिक उपलब्धि की स्मृति में पूरे देश के कोने-कोने से और विदेशों से भी आर्यजन भारी संख्या में स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन में पहुंचे थे। इस अवसर पर **"काशी में वेदों का डंका"** विद्यामठ वाराणसी, डॉ. वेदपाल जी, प्रधान परोपकारिणी सभा, डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, स्वामी धर्मेश्वरानंद जी आदि महानुभावों ने महर्षि दयानंद द्वारा शास्त्रार्थ विजय पर अपने

" मानव सेवा के लिए आर्यसमाज सदैव तत्पर रहा है। आर्यसमाज के कार्यों को देखकर मेरी आत्मा प्रसन्न हो जाती है। एक समय वह था जब हम अपनी संस्कृति और सभ्यता को पश्चिम की संस्कृति से कम समझने लगे थे। लेकिन स्वामी दयानंद सरस्वती ने हमें वैदिक धर्म का मार्ग दिखाया। "

- पद्मविभूषण महाशय धर्मपाल जी
स्वागताध्यक्ष, महासम्मेलन

" महर्षि दयानंद की शिक्षाएं सार्वभौमिक तथा मानवमात्र के कल्याण के लिए अनुकरणीय है। ऋषिवर के द्वारा बताया गया मार्ग ही कल्याण का मार्ग है। गुजरात राज भवन में मैं प्रतिदिन यज्ञ करता हूं। सभी आर्यजनों को यज्ञ, योग और स्वाध्याय को दिल से अपनाना चाहिए। "

- आचार्य देवव्रत जी,
माननीय गर्वनरश्री, गुजरात

" महर्षि दयानंद सरस्वती का संपूर्ण जीवन आर्यसमाज के उत्थान को समर्पित रहा है। ऋषि ने अकेले ही सारे जमाने की बुराईयों को दूर करने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित किया है। ऐसे ऋषिवर को शत-शत प्रणाम। हम सब आर्यजन निरंतर ऋषि ऋण से उऋण होने का प्रयास करें। "

- श्री गंगा प्रसाद जी
माननीय राज्यपाल, सिक्किम

" ऋषि दयानंद के द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर ही हम देश का भला कर सकेंगे। आज आर्य समाज विश्व स्तर पर मानव सेवा के अनेक कार्य कर रहा है। इसी तरह हम निरंतर आर्य समाज की शिक्षाओं को, सिद्धांतो, मान्यताओं, और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाएंगे। "

- श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी
प्रधान, सार्वदेशिक सभा

काशी शास्त्रार्थ स्मृति न्यास के संयुक्त तत्त्वावधान में महर्षि दयानंद काशी शास्त्रार्थ विजय के 150 वें वर्ष पर 11 से 13 अक्तूबर 2019 तीन दिवसीय स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन अपनी भव्य सफलताओं के साथ प्रेम-सौहार्द के वातावरण में संपन्न हुआ। इस स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन का शुभारंभ यज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या नंदिता शास्त्री जी एवं वेद पाठ गुरुकुल पाणिनि महाविद्यालय की ब्रह्मचारिणयों द्वारा किया गया। इसके उपरांत पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी सतीश चड्डा, महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी एवं अन्य अनेक आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान, मंत्री एवं आर्यजनों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया।

ज्ञात हो कि आज से 150 वर्ष पूर्व आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने काशी के आनंदबाग में 30 पंडितों के समूह के साथ अकेले पाषाणमूर्तिपूजादि विषय पर शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त की थी। यह घटना आर्यसमाज के लिए अत्यंत प्रेरक तथा महान उपलब्धि मानी गई। इसी विषय पर विशेष सम्मेलन का द्वीप प्रज्ज्वलन से शुभारंभ हुआ। जिसमें स्वामी डॉ. देवव्रत सरस्वती जी एवं साध्वी उत्तमा यति जी ने आशीर्वचन दिए। पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की उपस्थिति गरिमामय रही। श्री सुरेशचंद्र आर्य जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में, मुख्य अतिथि आचार्य देवव्रत जी, राज्यपाल गुजरात, सानिध्य श्री गंगा प्रसाद जी, राज्यपाल सिक्किम, विशिष्ट वक्ता के रूप में श्रीमती मृदुला जायसवाल, महापौर वाराणसी, स्वामी अभिमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी, काशी विचार प्रस्तुत किए।

सम्मेलन के प्रथम दिन दूसरे सत्र में **"शास्त्रार्थ परंपरा-सत्य की संस्थापक"** विषय पर विचारमंथन किया गया। जिसकी अध्यक्षता स्वामी धर्मेश्वरानंद जी सरस्वती महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने की। श्री शिव कुमार मदान जी का सानिध्य, श्री अनिल राजभर जी, कैबिनेट मंत्री उत्तरप्रदेश सरकार, श्री नीलकंठ तिवारी जी, राज्यमंत्री उत्तरप्रदेश सरकार, श्री रवीन्द्र जैसवाल जी, राज्यमंत्री उत्तरप्रदेश, श्री अशोक कुमार गुप्ता जी, श्री अर्जुनदेव चड्डा जी, प्रचार सचिव

- जारी पृष्ठ 6 पर

महासम्मेलन के अवसर पर काशी शास्त्रार्थ पर आधारित पुस्तक "" का विमोचन करते अतिथिगण, संन्यासीवृन्द एवं आर्यसमाज के वरिष्ठ अधिकारीगण।

पृष्ठ 5 का शेष

राजस्थान, श्री ब्यासनंद शास्त्री जी, मंत्री बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा और श्री भारतभूषण त्रिपाठी जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा झारखंड एवं अनेक अन्य महानुभावों का मार्गदर्शन इस सम्मेलन में प्राप्त हुआ। सायंकाल **"वैदिक सिद्धांत एवं वर्तमान युवा वर्ग"** विषय पर गहन चिंतन-मनन करते हुए इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री धर्मपाल आर्य जी, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने की। मुख्य अतिथि श्री विद्यामित्र ठुकराल कोषाध्यक्ष, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, डॉ. प्रियंवदा वेदभारती जी, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी, डॉ. विनय वेदालंकार जी, आचार्य भक्तिपुत्र रोहतम जी, डॉ. रामचंद्र पांडे जी आदि महानुभावों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर विश्व विख्यात भजनोपदेशक पंडित सत्यपाल पथिक जी के भजन एवं शास्त्रार्थ मंचन पाणिनि कन्या वाराणसी विद्यालय की प्रस्तुति अत्यंत मंत्रमुग्ध करने वाली थी।

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन के दूसरे दिन **"राष्ट्रीयता एवं आर्यसमाज"** विषय पर विशेष सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें स्वामी प्रणावानंद जी सरस्वती जी की उपस्थिति में अध्यक्ष डॉ. वेदपाल जी रहे। स्वामी धर्मेश्वरानंद जी, स्वामी सुमेधानंद जी, श्री सतीश चड्डा जी, आचार्या पवित्रा विद्यालंकार जी, आदि अनेक महानुभावों ने राष्ट्रनिर्माण में आर्य समाज की भूमिका के ऐतिहासिक तथ्यों एवं भविष्य की योजनाओं के ऊपर भरपूर प्रकाश डाला। दूसरे दिन दूसरे सत्र में **"आर्यसमाज और शास्त्रार्थ परंपरा"** विषय पर आचार्य स्वदेश जी, मथुरा की उपस्थिति ने अध्यक्ष स्वामी प्रणावानंद जी रहे। श्री भारतेंदु द्विवेदी जी, श्री ओम प्रकाश आर्य जी, उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री सुरेंद्र चौधरी जी, श्री बलदेव सचदेवा जी, श्री हरिओम बंसल जी, डॉ. प्रीति विर्मशनी जी, डॉ. गायत्री आर्या जी, डॉ. चंद्रशेखर लोखण्डे जी, आदि महानुभावों ने शास्त्रार्थ परंपरा का विधिवत उल्लेख किया।

सम्मेलनों के इस क्रम में **"शास्त्रार्थों का वर्तमान स्वरूप"** विषय पर साध्वी उत्तमा यति जी की उपस्थिति ने अध्यक्ष श्री प्रकाश आर्य जी रहे। आचार्य शिवदत्त पांडे जी, डॉ. नंदिता शास्त्री जी, पदमश्री डॉ. राजेश्वर आचार्य जी, वाराणसी, आदि विद्वानों ने शास्त्रार्थ विषय पर विशेष उद्बोधन दिया। 13 अक्तूबर को प्रात: काल श्री सुरेशचंद्र आर्य जी की अध्यक्षता में **"संकल्प सत्र"** का आयोजन किया गया। जिसमें डॉ. धीरज सिंह जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, श्री अरविंद आर्य जी, कोषाध्यक्ष उत्तरप्रदेश, श्री प्रकाश आर्य जी, मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री वाचोनिधि आर्य जी, उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, श्री सुरेशचंद्र गुप्ता जी, श्री सतीश चड्डा जी, आदि महानुभावों ने संकल्प शक्ति के विषय में विचार प्रस्तुत किए।

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन के समापन समारोह से पूर्व आर्यों की भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। स्वामी डॉ. देवव्रत जी के नेतृत्व में श्री वेदप्रकाश आर्य जी, श्री बृहस्पति आर्य जी, श्री विवेक आर्य जी, के पथ संचालन में हजारों की संख्या में युवक, महिलाएं, बच्चे, संन्यासीवृंद, आर्य नेता एवं राजनेताओं ने कार्यक्रम स्थल नरिया लंका से चलते हुए काशी शास्त्रार्थ स्मृति स्थल आनंदबाग में शोभायात्रा का समापन किया। सिर पर केसरिया टोपी, हाथों में ओम् ध्वज, महर्षि दयानंद सरस्वती की जय, आर्य समाज अमर रहे और भारतमाता की जय-जयकार करते हुए शोभायात्रा ने लगभग 8 किलोमीटर लंबी काशी के मुख्य मार्गों से गुजरते हुए शानदार तरीके से सफलता प्राप्त की। बीच-बीच में विभिन्न धार्मिक संगठनों द्वारा शोभायात्रा का स्वागत किया गया। और आर्यवीर दल एवं आर्यवीरांगना दल के द्वारा योग, लाठी, तलवार,एवं अन्य कई तरीकों से व्यायाम प्रदर्शन किए गए। शोभायात्रा का समापन काशी स्मृति स्थल आनंदबाग में हुआ। जहां पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान एवं अन्य महानुभावों ने प्रेरणाप्रद उद्बोधन भी दिए।

13 अक्तूबर 2019 को दोपहर 2 बजे से 4 बजे तक काशी स्मृति स्थल आनंदबाग वाराणसी में **"काशी शास्त्रार्थ स्मृति सम्मेलन"** का आयोजन किया गया। जिसमें सभी उपस्थित संन्यासी महानुभावों ने आर्यजनों को आशीर्वाद दिया। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री सुरेशचंद्र आर्य जी ने की। मास्टर ज्ञानेंद्र सिंह आर्य जी उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, श्री अरुण कुमार आर्य जी, श्री कपिलदेव आर्य जी, प्रधान, काशी शास्त्रार्थ स्मृति न्यास आदि विशेष अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। मुख्य वक्ता डॉ. चंद्रशेखर लोखण्डे जी ने काशी शास्त्रार्थ की स्मृतियों को जिंदा कर दिया। इसका संचालन श्री सतीश चड्डा जी ने किया और सह-संचालक की भूमिका में श्री वाचोनिधि, श्री सुरेशचंद्र गुप्ता जी रहे।

वैदिक धर्म महासम्मेलन के विशेष उद्बोधन

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन के अवसर पर स्वागताध्यक्ष पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि राष्ट्र कल्याण के लिए आर्यसमाज सदैव तत्पर रहा है। आर्यसमाज के कार्यों को देखकर मेरी आत्मा प्रसन्न हो जाती है। एक समय वह था जब हम अपनी संस्कृति और सभ्यता को पश्चिम की संस्कृति से कम समझने लगे थे। लेकिन स्वामी दयानंद सरस्वती ने हमें आत्मसम्मान से जीना सिखाया। ऋषिवर को शत-शत प्रणाम।

गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि महर्षि दयानंद की शिक्षाएं सार्वभौमिक तथा मानवमात्र के कल्याण के लिए अनुकरणीय हैं। ऋषिवर के द्वारा बताया गया मार्ग ही कल्याण का मार्ग है। गुजरात राज भवन में मैं प्रतिदिन यज्ञ करता हूं। सभी आर्यजनों को यज्ञ, योग और स्वाध्याय को दिल से अपनाना चाहिए। ऋषिवर ने वेदों का प्रमाण देकर विभिन्न कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंका था। हमें भी ऋषिवर का अनुकरण करते हुए बुराईयों को दूर भगाना चाहिए।

सुरेशचंद्र आर्य जी, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने विस्तृत उद्बोधन में आर्य समाज के इतिहास को स्वर्णिम इतिहास बताते हुए भविष्य में आर्यजनों को आशान्वित रहने का संदेश देते हुए कहा कि ऋषि दयानंद के द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर ही हम देश का भला कर सकेंगे। आज आर्य समाज विश्व स्तर पर मानव सेवा के अनेक कार्य कर रहा है। इसी तरह हम निरंतर आर्य समाज की शिक्षाओं को, सिद्धांतो, मान्यताओं, और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाएंगे।

श्री गंगाप्रसाद, राज्यपाल सिक्किम ने अपने उद्बोधन में कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती का संपूर्ण जीवन आर्यसमाज के उत्थान को समर्पित रहा है। ऋषि ने अकेले ही सारे जमाने की बुराईयों को दूर करने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित किया है। ऐसे ऋषिवर को शत-शत प्रणाम। हम सब आर्यजन निरंतर ऋषि ऋण से उऋण होने का प्रयास करें।

वाराणसी की महापौर मृदुला जायसवाल ने कहा स्वामी दयानंद सरस्वती ने कुरीतियों पर हमला करते हुए नारी को शिक्षा का अधिकार दिलाया, सती प्रथा से मुक्ति दिलाई, विधवाओं का उद्धार कराया, और मानवमात्र को जीना सिखाया। ऐसे ऋषि दयानंद ने काशी में शास्त्रार्थ विजय कर बुराई पर अच्छाई की जीत का झंडा गाडा था। इस सम्मेलन के आयोजकों को मेरी बहुत-बहुत बधाई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने काशी शास्त्रार्थ की स्मृति को याद दिलाते हुए कहा कि ऋषि दयानंद सत्य को ही सर्वोपरि माना और सत्य का ही प्रचार-प्रसार किया। वेदों की विद्या से मानवमात्र को जोड़ा और वेदों पर आधारित जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान की। वेदों में मूर्ति पूजा का कहीं उल्लेख नहीं है। इसी सत्य को उजागर कर ऋषि ने काशी शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त की थी। आज इस अवसर पर हम आर्यजनों को ऋषि के अधूरे सपनें को साकार करने का संकल्प लेना चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा वैदिक धर्म संस्कृति और संस्कारों के बल पर ही संपूर्ण विश्व में सुख-शांति का वातावरण बनेगा। हम महर्षि के अनुयायी अंधेरों में वेदज्ञान की रोशनी बिखेरते रहेंगे। असत्य पर सत्य की विजय करते रहेंगे।ऋषि का ऋण हम सब के ऊपर है। इसे चुकाने के लिए सदैव प्रयासरत्त रहेंगे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने शिक्षा की नगरी काशी में अपने वैदिक विचारों से नया उजाला किया था। ऋषिवर ने राष्ट्र उत्थान एवं मानवीय मूल्यों की रक्षा करने हेतु विभाजन कार्य शक्तियों से एकजुट होकर लड़ने का आहवान किया था। अंध ाविश्वास और पांखड से दूर रहने का संदेश देने वाले ऋषि दयानंद ने मानव जाति की उन्नति का रास्ता खोला था। आओ, आर्यो संकल्प ले हम ऋषि के सपनें को पूरा करेंगे।

नोट : सम्मेलन से सम्बन्धित उद्बोधन, समाचार एवं विस्तृत चित्रमय झांकी आगामी अंकों में भी प्रकाशित की जाएंगी।

साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका रजिस्टर का प्रकाशन

आर्यसमाज द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संगों में यज्ञ सत्संग के दौरान साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका में आर्य महानुभाव अपने-अपने हस्ताक्षर करते हैं जो कि आर्य समाज के उप-नियमों के अनुसार अनिवार्य भी हैं। किंतु कहीं-कहीं पर रजिस्टर के स्थान पर कॉपी अथवा रजिस्टर की स्थिति जीर्ण-शीर्ण होती है। अत: दिल्ली की आर्यसमाजों में उपस्थिति रजिस्टर की एकरूपता हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका-रजिस्टर का प्रकाशन किया है। रजिस्टर की हार्ड बाईडिंग, सुंदर मजबूत कागज, आर्य समाज, दिनांक, पता, उपस्थिति और वक्ता का नाम, फोन नं., विषय आदि सुंदर तरीके से दिए गए हैं जिससे आर्यसमाज के सत्संगों का पूरा रिकार्ड पंजिका में अंकित हो सके।

आप भी अपनी आर्यसमाज का उपस्थिति रजिस्टर तुरन्त बदलें और सभा द्वारा प्रकाशित रजिस्टर को अपनाएं।

आकार 10''×15'' पृष्ठ 104 मूल्य 200/- रुपये मात्र।

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पर्क सूत्र - 011-23360150, 9540040339

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

आर्यसमाज हनुमान रोड के वार्षिकोत्सव पर

वैदिक सत्संग

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव के अवसर पर वैदिक सत्संग के आयोजन में यजुर्वेदीय यज्ञ, भजन, प्रवचन आदि कार्यक्रम 30 अक्तूबर से 3 नवम्बर, 2019 तक होंगे। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य इन्द्रदेव शास्त्री जी तथा भजन श्री जितेन्द्र आर्य के होंगे। इस अवसर पर महिला सम्मेलन एवं भाषण प्रतियोगिता के अन्य अनेक कार्यक्रम होंगे। समापन समारोह 3 नवम्बर को होगा।

-विजय दीक्षित, मन्त्री

रजत जयंती समारोह एवं गुरुकुल महोत्सव का आयोजन

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री मुनीश्वरानंद भवन, नया टोला, पटना के तत्त्वावधान में दयानंद जन कल्याण आश्रम आर्ष गुरुकुल दयानंद वाणी द्वारा रजत जयंती समारोह एवं पंच दिवसीय गुरुकुल महोत्सव का भव्य आयोजन 1 अप्रैल 2020 से रविवार 5 अप्रैल 2020 तक आयोजित होगा। इस अवसर पर आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

-सुशील आर्य, संचालक एवं मंत्री

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं। *- संयोजक*

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

आर्य समाज के महापुरुषों के नाम पर मार्ग, पार्क एवं चौराहों के नामकरण आवश्यक सूचना

अपने सेवा प्रकल्पों एवं लोकोपकारी कार्यों के कारण विख्यात आर्य समाज का भारत में अपना विशेष स्थान है। सम्पूर्ण भारत में सैंकड़ो से ज्यादा स्थानों पर सड़क, मार्ग, पार्क और चौराहों के नाम आर्य समाज एवं आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती, स्वामी विरजानंद, स्वामी श्रद्धानंद आदि महापुरुषों के नाम पर रखे गए हैं, यह अपने आपमें गौरव की बात है। किन्तु इनकी जानकारी एवं रिकार्ड न हो पाना एक खेद का विषय भी है।

अतः भारत की समस्त आर्यसमाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्य संस्थानों के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं आर्यजनों से अनुरोध है कि आप कहीं भी आर्य समाज एवं आर्य महापुरुषों के नाम पर किसी भी सड़क, मार्ग, पार्क और चौराहे को देखें या आपके क्षेत्र में ऐसा कोई नया नामकरण हुआ हो तो कृपया इसकी सूचना/फोटो/सम्बन्धित प्रस्ताव/जानकारी **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15-हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजें अथवा 9650183339 पर व्हाट्स एप्प पर भेजें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है।

- सम्पादक

आओ जानें ! सत्य ? असत्य ?

आओ पढ़ें !

सत्यार्थ प्रकाश

पृष्ठ 4 का शेष

हे मेरे ऋषिवर ! तुम्हें ...

क्यों इन मांसाहारियों की आत्माओं में दया का प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता, जिससे ये इन बुरे कामों से बचें।

त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति

त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति ऋषि देव दयानंद जी ने अपना सर्वस्व मानव समाज के उत्थान हेतु समर्पित कर दिया। अपना घर त्याग कर ऋषिवर वनों-जंगलों में सच्चे ईश्वर की खोज में लम्बे समय तक भ्रमण करते रहे। इस दौर में ठग और लुटेरों ने उनके कीमती वस्त्र और आभूषण तक उतार लिए फिर भी ऋषिवर निर्भीक विचरण करते रहे। ऋषि के जीवन में ऐसे कई अवसर आए जब राजा- महाराजाओं ने उन्हें धन-सपंदा और मठाधीश बनने का लोभ-लालच प्रस्तुत किया लेकिन ऋषिवर कभी भी सत्य की राह से विचलित नहीं हुए।

गुरु आज्ञा पालक

गुरु दक्षिणा के रूप में अपना पूरा जीवन मानव कल्याण के लिए समर्पित करने वाले ऋषिवर आपने गुरु-शिष्य परंपरा का **"भूतो न भविष्यति"** वाला उदाहरण प्रस्तुत किया है। आपने गुरु विरजानंद दण्डी जी की आज्ञा अनुसार मानव समाज पर परोपकार करते हुए अपनी सेवाओं को किसी एक बिंदु तक सीमित नहीं रहने दिया। अपितु आपने राष्ट्र एवं मानव सेवा के सर्वांगीण विकास में अहम भूमिका निभाई है। आपकी प्रेरणा से आर्य समाज ने देश की आजादी में अग्रिम भूमिका निभाई, वेदज्ञान की अमृतधारा को जन-जन तक पहुंचाया, जातिवाद का भेद मिटाया, नारी को शिक्षा का अधिकार दिलाया, विधवा उद्धार कराया, गौरक्षा का अलख जगाया, हिंदी भाषा के सम्मान में प्रथम आवाज आर्य समाज ने उठाई, यज्ञीय संस्कृति को पुनः जागृत किया, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की पुर्नस्थापना की, भय और प्रलोभन के कारण मुस्लिम-ईसाई बने हिंदुओ का शुद्धि संस्कार करके उन्हें पुनः हिंदू-आर्य बनाकर गले लगाया।

शास्त्रार्थ महारथी

ऋषिवर की तेजस्वी-ओजस्वी वाणी परम की वीणा के समान थी। आप सदैव मानवजाति की उन्नति-प्रगति का आधार सत्योपदेश और सत्योपदेश का अजस्र स्रोत ईश्वर की अमृत वाणी वेद को मानते थे। इसलिए ऋषिवर ने वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार हेतु अनेकों स्थानों पर सैकड़ों शास्त्रार्थ किए। इन शास्त्रार्थों की श्रृंखला में विरोधीजन स्वामी जी के ज्ञान प्रवाह का सही जवाब देने में तो असमर्थ ही रहे लेकिन उन्होंने स्वामी जी के ऊपर ईट-पत्थर बरसाने में कभी कोई कसर नहीं छोड़ी। स्वामी जी सदैव शारीरिक कष्ट और अपमान सहकर भी अज्ञान के अंधेरों के बीच वेदज्ञान का उजाला फैलाते रहे।

अतिशय-अनन्य राष्ट्र प्रेमी

भारत राष्ट्र के अतिशय अनन्य प्रेमी के रूप में ऋषिवर की अनुपम प्रेरणा हर भारतवासी के लिए अनुकरणीय है। आपने सबसे पहले स्वदेशी राज्य की उदघोषणा करते हुए कहा था कि विदेशी राजा चाहे कितना भी महान क्यों न हो स्वदेशी राजा से अच्छा कभी नहीं हो सकता।

एक ऋषिवर के अनेक उपकार

एक ऐसा महान संन्यासी जिसने निर्भीक होकर समाज की कुप्रथाओं, कुरीतियों पर प्रहार किया। एक ऐसा महामना जिसने कभी भी सत्य से समझौता नहीं किया।एक ऐसा धर्म धुरन्धर जो केवल वेद का ही नहीं अपितु कुरान, पुराण, बाइबल, त्रिपिटक व अन्य मजहबों व मत-मतान्तरों के ग्रन्थों का ज्ञान रखता था। एक ऐसा सत्य का पुरोधा जो अपनी हर बात डंके की चोट पर कहता था। एक ऐसा धर्म धुरन्धर जिसने सभी पाखण्डों का खण्डन कर सत्य की राह दिखाई। एक ऐसा धर्म धुरन्धर जिसने इस देश का धर्मान्तरण (ईसाइयत व इस्लामीकरण) होने से केवल रोका ही नहीं वरन् शुद्धि व घर वापसी द्वारा देश का उद्धार किया।एक ऐसा सत्यनिष्ठ जिसे किसी प्रकार के लोभ व लालच विचलित नहीं कर पाया। एक ऐसा संन्यासी जो इंर्ट-पत्थरों के वार से भी विचलित न हुआ वरन् उसके संकल्प और भी मजबूत हुए।एक ऐसा ऋषि जिसने पुनः यज्ञ, योग व पुरातन ऋषि-महर्षियों के ज्ञान को स्थापित कराया। एक ऐसा ज्ञानी जिसने ऋषिकृत पाणिनि, जैमिनी, ब्रह्मा, चरक, सुश्रुत आदि ग्रन्थों का उद्धार किया।एक ऐसा ऋषि जिसने ऋषियों के नाम से बने सभी असत्य ग्रन्थों का भण्डा फोड़ा व हमारे ऋषियों के नाम पर लगे दाग को मिटाया। एक ऐसा समाज सुधारक जिसने सबसे पहले सती प्रथा, बाल-विवाह जैसी कुप्रथाओं पर प्रहार कर समस्त भारत में नारी की प्रतिष्ठा को समाज में पुनः स्थापित कराया।एक ऐसा समाज सुधारक जिसने मांसाहार व शाकाहार में भेद स्पष्ट कर समाज को पुनः शाकाहार के रास्ते पर चलाया।एक ऐसा साहसी व्यक्ति जिसका साहस अपमान, तिरस्कार से कम नहीं हुआ बल्कि और भी दृढ़ हुआ।एक ऐसा समाज सुधारक जिसने केवल भारत के लिए ही नहीं अपितु विश्व के कल्याण की भावना से निस्वार्थ काम किया।

ऐसे महान ऋषिपर को बार-बार प्रणाम। हे मेरे ऋषिवर, तुम्हें प्रणाम बार-बार।।

- आचार्य अनिल शास्त्री

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

स्वाध्याय प्रेमियों के लिए

365 वेद मन्त्रों का अभूतपूर्व संग्रह : प्रतिदिन एक मन्त्र का हृदय से पाठ करें

वैदिक विनय

20% छूट के साथ मात्र 200/- रुपये में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 17-18 अक्तूबर, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 अक्तूबर, 2019

ओ३म् ओ३म्

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से

136 वाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस

की पूर्व संध्या पर भव्य आयोजन

प्रतिष्ठा में,

शनिवार, 26 अक्तूबर 2019

अपराह्न- 3.15 बजे से सायं 6 बजे तक

स्थान : रामलीला मैदान (अजमेरी गेट), नई दिल्ली-2

इस विशाल समारोह में आप दलबल, परिवार एवं इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं। समय पर आयोजन स्थल पर पहुंचकर कार्यक्रम की सफलता में योगदान दें।

इस अवसर पर वैदिक विद्वानों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं को स्मृति पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जायेगा।

कृपया ध्यान दें

इस वर्ष दीवाली की पूर्व संध्या अर्थात् 26 अक्तूबर, 2019 को सायंकाल होगा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 136वें निर्वाण दिवस का विशेष आयोजन। कृपया आर्यजन सोशल मीडिया के माध्यम से इस सूचना का

निवेदक

महाशय धर्मपाल प्रधान	सुरेन्द्र कुमार रैली व. उप प्रधान
सतीश चड्डा महामन्त्री	अरुण प्रकाश वर्मा कोषाध्यक्ष

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

देश और समाज विभाजन के षड्यन्त्र का पर्दाफाश

आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

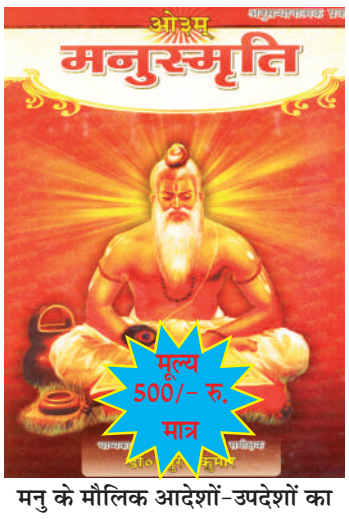

मूल्य : ~~600~~/- 500/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

सत्यार्थ प्रकाश ऑडियो

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को विभिन्न भाषाओं में सुनने की सुविधा वाली एप्लीकेशन।

Google Play
Satyarth Prakash Audio

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह